B.A. PARAT-II Pepaper-III

सेतुबन्ध की गाथा

8. तो हरिवइजसवन्थो राहवजीअस्स पढमहत्थलम्बो।
सीताबाहविहाओ दहमुहवज्झदिअहो उवगओ सरओ॥

अर्थ = तदनन्तर वर्षाकाल के बाद सुग्रीव के यश-मार्ग, राघव के जीवन के लिए प्रथम हस्तावलम्ब सीता के वाष्प दुःख का विघातक और दशमुख के वध्य दिवस के रूप में शरद का आगमन हुआ।

9. दिणमणिमोहप्फुरिअं गलिअं घणलच्छिरअणरसणादामं।
उद्धमअणबाणवत्तं णहमन्दारणवकेसरं इन्दधणुं॥

अर्थ = सूर्य की किरणों से स्फुरित, मेघ-श्री के रत्ननिर्मित रशनादाम के समान, ऋतु रूप मदन के बाणपात्र और आकाश रूप मन्दार वृक्ष के समान इन्द्र धनुष समाप्त हुआ।

10. धुअमेहमहुअराओ घणसमआअड्ढिओणअविमुक्काओ।
णहपाअवसाहाओ णिअअट्ठाणं व पडिगआओ दिसाओ॥

अर्थ = मेघरूप मधुकरों से रहित, वर्षाकाल के द्वारा आकृष्ट होने से अवनत (झुकी हुई) किन्तु अब विमुक्त दिशाएँ मानो आकाश रूप वृक्ष की शाखाओं के समान अपने स्थान पर लौट गयी।

11. अहिणवणिद्धालोअ उद्धदेसासारदीसमाणजलबवा।
णिम्माअमज्जणसुहा धरवसुआअच्छविं वहन्तिव दिसा॥

अर्थ = एक देश में जलवर्षण से दिखाई पड़ने वाले जल बिन्दुओ एवं नवीन स्निग्ध आलोक से युक्त दिशा मानो मज्जन सुख (स्नान-सुख) को प्राप्त कर किंचित शुभ्र छवि को धारण कर रहे है।

12. सुहसंमाणिअणिद्दो विरहासुडिखअसमुद्द दिणणुक्कण्ठो।
असुवन्तो वि पिबुद्धो पढमविबुद्ध सिरिसेविओ महमहणो॥

अर्थ = सुख के लिए निद्रा को संमानित करने वाले एवं विरह स्पृष्ट समुद्र को उत्कण्ठित करने वाले प्रथम जगी हुई लक्ष्मी के द्वारा सेवित मधु मथन (विष्णु) निद्रा को न प्राप्त हुए भी जागरित हुए।

13. सोहइ विसुद्धकिरणे गअणसमुद्दम्मि रअणिवेलालग्गो।
तारामुत्तावअरो फुडविहअमेहसिप्पिसंपुडमुक्को॥

अर्थ = आकाश रूपी समुद्र मे रात्रि रूप वेला (तट) से लगे हुए विशुद्ध किरणों से युक्त स्फुट रूप से विघटित मेघ रूपी शक्ति के संपुट के मुक्त होने पर तारा रूपी मुक्ता-समूह सुशोभित हो रहा है।

Scanned with CamScanner